



3rd - ग्रेड



अध्यापक

लेवल - द्वितीय

कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा
राजस्थान बीकानेर

भाग - 5 (I)

सामाजिक विज्ञान - (ब)

भूगोल एवं सामाजिक अध्ययन
शिक्षण विधियाँ

3rd GRADE TEACHER

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
विश्व का भूगोल		
1.	पृथ्वी की गतियाँ	1
2.	अक्षांश व देशान्तर रेखाएँ	3
3.	स्थल खंड को प्रभावित करने वाले बल	7
4.	विश्व की पवन प्रणाली	8
5.	चक्रवात एवं प्रतिचक्रवात	14
6.	सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण	17
7.	पृथ्वी के जलवायु कटिबंध	19
8.	जैवमण्डल	21
9.	सौर मंडल (Solar System)	25
10.	भूकम्प (EARTHQUAKE)	29
भारत का भूगोल		
1.	भारत का विस्तार एवं स्थिति	38
2.	भारत के भौगोलिक भू-भाग	43
3.	भारतीय मानसून	71
4.	भारत की मिट्टी/मृदा	80
5.	भारत की प्राकृतिक वनस्पति	85
6.	भारतीय कृषि	89
7.	भारत के उद्योग	96
8.	भारत की जनगणना	101
9.	भारत में खनिज संसाधन	109
10.	भारत की बहुउद्देश्यीय परियोजनाएँ	118
11.	भारत की परिवहन प्रणाली	126

12.	मानव संसाधन	135
13.	पृथ्वी का वायुमण्डल	139
14.	विविध	140

शिक्षण विधियाँ

शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे – I

1.	सामाजिक विज्ञान/सामाजिक अध्ययन की संकल्पना	149
2.	कक्षा-कक्ष की प्रक्रियाएँ	152
3.	सामाजिक अध्ययन के अध्यापन सम्बन्धी समस्याएँ	160
4.	समालोचनात्मक चिन्तन	161

शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे – II

1.	पृच्छा/आनुभाविक साध्य	163
2.	शिक्षण अधिगम सामग्री एवं सहायक सामग्री	164
3.	सामाजिक, अध्ययन की शिक्षण विधि	166
4.	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी	188
5.	प्रायोजना कार्य	203
6.	सीखने के प्रतिफल	205
7.	मूल्यांकन	210

विश्व का भूगोल

पृथ्वी की गतियाँ

- पृथ्वी ध्रुवों पर चपटी एवं विषुवत् रेखीय पेटी में उभरी हुई है। ऐसी आकृति को भू-आभ (Geoid) कहा जाता है। पृथ्वी का विषुवतीय व्यास 12756 किमी. तथा ध्रुवीय व्यास 12713 किमी. हैं।
- पृथ्वी अपने अक्ष पर $23\frac{1}{2}$ झुकी हुई हैं अर्थात् ध्रुवी अण्डाकार कक्षातल (Plane of Ecliptic) के साथ $66\frac{1}{2}$ का कोण बनाती है। पृथ्वी की दो गतियाँ होती हैं – (1) घूर्णन (Rotation) या दैनिक गति (2) परिक्रमण (Revolution) अथवा वार्षिक गति।

पृथ्वी एवं उसके ग्रहीय संबंध

1. **घूर्णन (Rotation)** – पृथ्वी अपने अक्ष पर पश्चिम से पूर्व की ओर लगभग 24 घण्टों (23 घण्टे, 26 मिनट, एवं 4.09 सेकण्ड) में एक चक्कर पूरा करती है। यह अवधि एक दिन (Day) का निर्माण करती है, अतः पृथ्वी की उस गति को दैनिक गति कहते हैं।
2. पृथ्वी की विषुवतरेखीय परिधि 40,075 किमी. है, जिस पर एक बिन्दु 1669 किमी. प्रति घण्टा की दर से गतिशील होता है।

घूर्णन के प्रभाव – (Effects of Rotation) –

1. दिन –रात का होना।
2. समय का माप।
3. दिवस के विभिन्न काल।
4. ग्लोब पर किसी स्थान का स्थिति निर्धारण।
5. आकाश में ग्रहों का पूर्व से पश्चिम की ओर घूमते हुए प्रतीत होना।
6. प्रचलित पवनों एवं समुद्री धाराओं की दिशा पर प्रभाव।
7. दैनिक ज्वार भाटों में समय का अन्तर।

परिक्रमण (Revolution)

पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमते हुए अपनी कक्षा (Orbit) पर सूर्य की परिक्रमा करती है। सूर्य की परिक्रमा करते हुए पृथ्वी वर्ष में एक बार सूर्य से अधिकतम दूरी पर होती है। 3 जनवरी का पृथ्वी इनके निकटतम स्थित होती है, इसे 'उपसौर' (Perihelion) कहते हैं। 4 जुलाई को सूर्य पृथ्वी से अधिकतम दूरी पर स्थित होता है, इसे 'अपसौर' (Aphelion) कहते हैं। उपसौर के समय सूर्य से पृथ्वी की दूरी 14.7 करोड़ किमी. तथा अपसौर के समय 15.2 करोड़ किमी. होती है।

परिक्रमण के प्रभाव (Effects of Revolution) –

1. अयन वृत्तों का निर्धारण।
2. ध्रुव वृत्तों का निर्धारण।
3. मध्याह्न के समय सूर्य की ऊँचाई में अन्तर।
4. दिन व रात की लम्बाई में अन्तर – यूरोप में स्थिति नार्वे देश में अर्द्ध रात्रि के समय भी सूर्य का प्रकाश रहने के कारण उसे 'अर्द्ध रात्रि के सूर्य का देश' (Land of the Midnight Sun) कहते हैं।

5. ऋतु परिवर्तन

- (i) **21 जून की स्थिति (Summer Solstic)** – इस स्थिति में सूर्य कर्क रेखा पर लम्बवत् चमकता है। उत्तरी गोलार्द्ध में दिन बड़े एवं रातें छोटी होती हैं। अतः उत्तरी गोलार्द्ध में ग्रीष्म ऋतु होती है। यह स्थिति **कर्क संक्रान्ति** कहलाती है। दक्षिणी गोलार्द्ध में तिरछी किरणों के कारण रातें बड़ी तथा दिन छोटे होते हैं तथा शीत ऋतु रहती है।
- (ii) **22 दिसम्बर की स्थिति** – इस स्थिति में सूर्य मकर रेखा पर लम्बवत् चमकता है। अतः दिन बड़े व रातें छोटी होती है। यह स्थिति मकर संक्रान्ति (**Winter Solstic**) की है जब दक्षिणी गोलार्द्ध में ग्रीष्म ऋतु होती है। उत्तरी गोलार्द्ध में सूर्य की किरणों के तिरछे होने के कारण दिन छोटे व रातें लम्बी होती हैं तथा शीत ऋतु होती है।
- (iii) **21 मार्च एवं 23 सितम्बर की स्थितियाँ** – इन दोनों स्थितियों में सूर्य विषुवत् रेखा पर लम्बवत् चमकता है। सभी अक्षांशों पर दिन व रात बराबर होते हैं। दोनों गोलार्द्धों में दिन रात एवं ऋतु की समानता होने के कारण इन स्थितियों को विषुव कहा जाता है। 21 मार्च की स्थिति **बसन्त विषुव** तथा 23 सितम्बर की स्थिति **शरद् विषुव** कहलाती है।

अक्षांश एवं देशान्तर रेखाएँ

भौगोलिक जाल – ग्लोब पर उत्तर से दक्षिण व पूर्व से पश्चिम की ओर खींची गई रेखाओं का एक जाल होता है।

अक्षांश रेखा – विषुवत् रेखा के उत्तर व दक्षिण में पूर्व से पश्चिम की ओर खींची गयी काल्पनिक रेखाएँ अक्षांश रेखाएँ कहलाती हैं।

- कुल अक्षांश रेखाएँ – 179
- कुल अक्षांश – 181
- मानचित्र पर 181 अक्षांश दर्शाई जाती हैं।

नोट – 90° उत्तरी व दक्षिणी अक्षांश वास्तविक रूप से बिन्दु हैं न कि रेखा।

- 0° विषुवत् रेखा पृथ्वी को दो बराबर भागों में बाँटती है – उत्तरी गोलार्द्ध एवं दक्षिणी गोलार्द्ध।

अक्षांश रेखाओं की विशेषताएँ

- (i) अक्षांश रेखाएँ पूर्व से पश्चिम की ओर विषुवत् रेखा के समान्तर खींची जाती हैं।
- (ii) 0° अक्षांश या विषुवत् वृत्त सबसे बड़ा वृत्त है जिसे वृहत् वृत्त कहते हैं। जबकि अन्य अक्षांश वृत्त उत्तर व दक्षिण की ओर जाने पर छोटे होते हैं।
- (iii) विषुवत् रेखा के पास दो अक्षांशों के बीच की दूरी 110.6 कि.मी. है जबकि ध्रुवों के पास 111.7 कि.मी. है।

नोट – विषुवत् रेखा से ध्रुवों की ओर जाने पर इनके बीच की दूरी बढ़ती जाती है जिसका कारण पृथ्वी का चपटापन होना है।
- (iv) दो अक्षांशों के बीच का भाग 'वदम (जोन/कटिबन्ध) कहलाता है।
- (v) अक्षांशों का उपयोग किसी स्थान की स्थिति ज्ञात करने एवं पृथ्वी को ताप कटिबन्धों में बाँटने का किया जाता है।
- (vi) पृथ्वी अपने अक्ष पर $23\frac{1}{2}$ डिग्री झुकी हुई है जबकि अपने कक्ष तल से $66\frac{1}{2}$ डिग्री का कोण बनाती है।

देशान्तर / याम्योत्तर रेखा

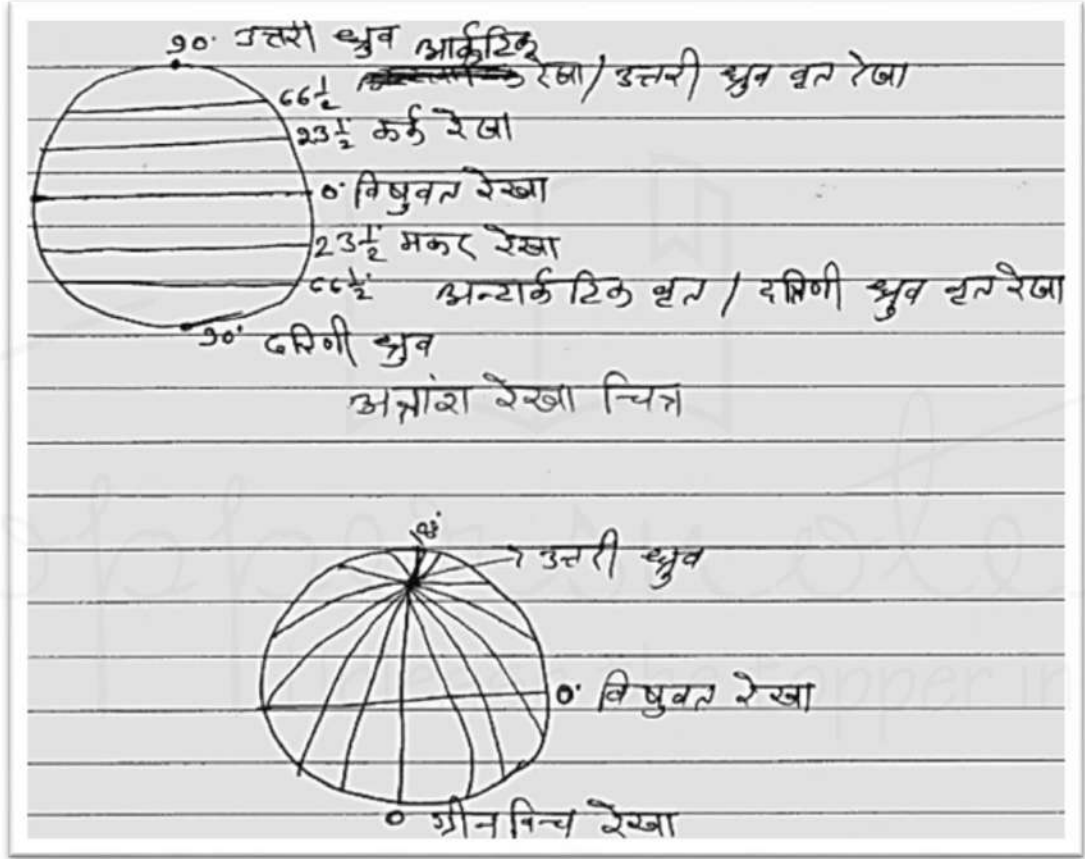
- ग्रीनविच रेखा (0°) या प्रमुख याम्योत्तर रेखा पृथ्वी को पूर्वी व पश्चिमी गोलार्द्ध में बाँटती है।
- यह रेखा पूर्व व पश्चिम में उत्तर से दक्षिण खींची जाती है।
- ग्रीनविच रेखा के पूर्व व पश्चिम की ओर समान कोणीय मान को देशान्तर कहते हैं। कुल अक्षांश रेखाएँ – 360°

देशान्तर रेखाओं की विशेषताएँ

- (I.) ग्रीनविच रेखा के सापेक्ष पूर्व व पश्चिम में उत्तर से दक्षिण की ओर खींची जाने वाली रेखाएँ।
- (II.) देशान्तर ध्रुवों से बाहर की ओर विकृत होने वाली रेखाएँ हैं जो अर्द्धवृत्त के रूप में खींची जाती हैं। दो देशान्तर रेखाएँ एक-दूसरे से विपरीत होने वाले एक पूर्ण वृत्त का निर्माण करती हैं।

- (III.) दो देशान्तरों के बीच की दूरी विषुवत् रेखा पर 111.32 कि.मी. है जो 45° उत्तरी व दक्षिणी अक्षांश पर 79 कि.मी. तथा ध्रुवों के पास शून्य हो जाती है।
- (IV.) देशान्तर रेखाओं की सहायता से किसी स्थान की स्थिति एवं समय का निर्धारण किया जाता है।
- (V.) 180° देशान्तर को 1884 ई. में वांशिंगटन सम्मेलन में अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा घोषित किया गया।

- पृथ्वी पर कुल 360° देशान्तर है। पृथ्वी अपनी धुरी पर 24 घण्टों में एक चक्र पूरा करती है।
- विश्व कुल 24 जोन समय में बाँटा गया है।
- किसी भी देश का समय निर्धारण $7\frac{1}{2}$ या 15° के अन्तराल पर किया गया है।



- दो देशान्तरों के बीच के स्थान को गोर (Gore) कहते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा

- देशान्तर को 1884 ई. में वांशिंगटन में अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा घोषित किया गया।
- अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा आर्कटिक महासागर से बेंरिंग जल संधि व प्रशान्त महासागर से होते हुए दक्षिणी ध्रुव तक जाती है।
जिसे अनेक स्थानों पर मोड़ा गया है— रूस, एल्यूशियन द्वीप सोलोमन द्वीप फिजी व टोगा द्वीप के पास।

अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा के पश्चिम से पूर्व की ओर जाने पर 1 दिन घट जायेगा जबकि पूर्व से पश्चिम की ओर जाने पर 1 दिन बढ़ जायेगा।

पूर्वी						पश्चिमी
		पश्चिमी गोलार्द्ध	पूर्वी गोलार्द्ध			
179°	180°	179°	ग्रीनविच	179°	180°	179°

पश्चिमी दिशा पूर्वी गोलार्द्ध	पूर्व दिशा पश्चिमी गोलार्द्ध
180°	

Q.1 यदि गोलार्द्ध में सोमवार है तो पूर्वी गोलार्द्ध में कौन – सा वार होगा ?

Ans. मंगलवार (क्योंकि पश्चिम से पूर्व की ओर जाने पर समय बढ़ता है।)

Q.2 यदि अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा के पश्चिम में 24 अगस्त है तो पूर्व में क्या दिनांक होगी ?

Ans. 23 अगस्त (क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा के पूर्व दिशा में पश्चिमी गोलार्द्ध व पश्चिम दिशा में पूर्वी गोलार्द्ध है।)

विश्व में समय निर्धारण

स्थानीय समय

- किसी देशान्तर का सूर्य के आधार पर निश्चित किया गया समय उस देशान्तर का स्थानीय समय कहलाता है।
- किसी देशान्तर के स्थानीय समय को बड़े क्षेत्र पर लागू कर दिया जाए तो उस देशान्तर के समय को मानक या प्रमाणित समय कहा जाता है।
- विश्व में समय का निर्धारण ग्रीनविच रेखा के सापेक्ष किया गया है जो ब्रिटेन के लंदन से गुजरती है।
- ग्रीनविच रेखा के पूर्व की ओर जाने पर समय को जोड़ा जाता है जबकि पश्चिम की ओर जाने पर समय को घटाया जाता है।

समय निर्धारण की प्रक्रिया

1. दिये गये स्थानों के बीच का देशान्तरीय अन्तराल निकालना।
2. निकाले गये अन्तराल को 4 से गुणा करना।
3. दिये गये स्थान के अनुसार समय को जोड़ना व घटाना।

Q.1 यदि लंदन में दोपहर के तीन बजे है। 60° पूर्वी के देशान्तर पर स्थित 'A' नगर का क्या समय होगा ?

Ans. अन्तर = 60°

भारत का भूगोल

भारतीय भूगोल (Indian Geography)

भारत का विस्तार

- भारत का अक्षांशीय विस्तार $8^{\circ}4'$ से $37^{\circ}6'$ उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरिक विस्तार $68^{\circ}7'$ से $97^{\circ}25'$ पूर्वी देशान्तर है परन्तु भारत में उत्तर से दक्षिण तक की दूरी, पूर्व से पश्चिम की दूरी से अधिक है क्योंकि ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर बढ़ने पर देशान्तर के बीच दूरी कम होती जाती है परन्तु अक्षांशों के बीच दूरी समान रहती है।
- भारत का क्षेत्रफल = $3287263 \text{ किमी.}^2 =$ लगभग 32.8 लाख किमी.²
- विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.4% भारत का क्षेत्रफल है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का विश्व में 7th स्थान है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से अधिकतम क्षेत्रफल वाले देश-

➤ रूस	➤ ऑस्ट्रेलिया
➤ कनाडा	➤ भारत
➤ चीन	➤ अर्जेंटिना
➤ यू.एस.ए	➤ कजाकिस्तान
➤ ब्राजील	➤ अल्जीरिया
- भारत की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 121 करोड़ है जो विश्व की जनसंख्या का 17.5% है।
- नवीनतम आँकड़ों के अनुसार 2021 में भारत की जनसंख्या लगभग 139 करोड़ हो चुकी है।
- जनसंख्या के आधार पर विश्व में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है।
- भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत, नेपाल, चीन तथा भूटान देश हैं तथा पश्चिम में अरब सागर, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार है और दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर से घिरा है।
- भारत में अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में स्थित है तथा लक्षद्वीप अरब सागर में स्थित है।
- भारत का दक्षिणतम बिन्दु $64^{\circ}5'$ उत्तरी अक्षांश है जिसे पिग्मेलियन प्वाइंट कहते हैं।
- अरावली की पहाड़ियाँ राजस्थान में स्थित हैं। यह सबसे पुरानी चट्टानों से बनी हैं। इस पहाड़ी की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट आबू पर स्थित गुठशिखर है। इसकी ऊँचाई 1722 मी. है।
- विन्ध्याचल का पठार झारखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्यों में है। यह परतदार चट्टानों का बना है। विन्ध्याचल पर्वतमाला उत्तर भारत को दक्षिण भारत से अलग करती है।
- मैकाले पठार छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित है। मैकाले पहाड़ी का सर्वोच्च शिखर अमरकण्ठक है। इसकी ऊँचाई 1036 मी. है। यह पुरानी चट्टानों का बना एक ब्लॉक पर्वत है।
- शतपुड़ा की पहाड़ियाँ मध्य प्रदेश में हैं। ये ज्वालामुखी चट्टानों की बनी हैं। इनकी सबसे ऊँची चोटी धूपगढ़ (1350 मी.) है।

- दक्कन का पठार महाराष्ट्र राज्य में है। यह ज्वालामुखी बेसाल्ट चट्टान का बना है। यह काली मिट्टी का क्षेत्र है। इसके पश्चिमी हिस्से में शह्याद्रि की पहाड़ी है। शह्याद्रि की सबसे ऊँची चोटी कल्शुबाई है।
- धारवाड का पठार कर्नाटक राज्य में है। यह परिवर्तित चट्टानों का बना है। इस पठार के पश्चिमी भाग में बाबा बुदन की पहाड़ी तथा ब्रह्मगिरि की पहाड़ी है।

ऋक्षांश का प्रभाव

- भारत का ऋक्षांशीय विस्तार 30° होने के कारण भारत में जलवायु, मृदा तथा वनस्पति से संबंधित विविधता पाई जाती है।
- कर्क रेखा ($23\frac{1}{2}^\circ N$) भारत को दो प्रमुख भागों में बाँटती है- भारत का दक्षिणी भाग ऊष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में तथा उत्तरी भाग शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में स्थित है।
- भारत में उष्ण कटिबन्धीय मानसून जलवायु पाई जाती है क्योंकि उत्तर में स्थित हिमालय पर्वत साइबेरिया से जाने वाली ठण्डी पवनों को रोकता है।
- कर्क रेखा भारत के निम्नलिखित 8 राज्यों से होकर गुजरती है।

➤ गुजरात	➤ झारखण्ड
➤ राजस्थान	➤ पश्चिम बंगाल
➤ मध्यप्रदेश	➤ त्रिपुरा
➤ छत्तीसगढ़	➤ मिजोरम

देशान्तर का प्रभाव

- भारत का देशान्तीय विस्तार 30° होने के कारण भारत के सबसे पूर्वी तथा पश्चिमतम भाग के बीच 2 घंटे का अन्तर पाया जाता है।
- $82\frac{1}{2}^\circ$ पूर्वी देशान्तर को भारत की स्थानीय समय गणना के लिए एक मानक देशान्तर के रूप में चुना गया है। यह रेखा प्रयागराज के मैने से होकर गुजरती है।
- भारत का मानक समय **GMT** से $5\frac{1}{2}$ घंटे आगे है।
- $82\frac{1}{2}^\circ$ पूर्वी देशान्तर निम्नलिखित राज्यों से होकर गुजरती है :-

➤ उत्तर प्रदेश
➤ मध्यप्रदेश
➤ छत्तीसगढ़
➤ ओडिशा
➤ आंध्र प्रदेश

देश के चार सीमा बिन्दु

- पूर्वी बिन्दु - किबिथु (झरुणाचल प्रदेश)
- पश्चिम बिन्दु - गौर मोता (गुजरात)
- उत्तरी बिन्दु - इन्दिरा कॉल (लद्दाख)
- दक्षिणी बिन्दु - इन्दिरा प्वाइन्ट (ग्रेट निकोबार द्वीप)

Border of India

1. स्थलीय सीमा

- भारत की स्थलीय सीमा लगभग 15200 किमी. (15106.7 किमी.) है ।
- भारत की स्थलीय सीमा निम्न देशों को स्पर्श करती है :-

NCRT के अनुसार

1.	बांग्लादेश = 4096.7 km (सर्वाधिक)	4096 किमी
2.	चीन = 3488 km	3917 किमी
3.	पाकिस्तान = 3323 km	3310 किमी
4.	नेपाल = 1751 km	1752 किमी
5.	म्यांमार = 1643 km	1458 किमी
6.	भूटान = 699 km	587 किमी
7.	अफगानिस्तान = 106 km (सबसे कम)	80 किमी यह सीमा अप्रत्यक्ष रूप से लगती है ।

देश तथा सीमा पर स्थित भारतीय राज्य

क्र. सं.	देश	कुल संख्या	भारतीय राज्य
1.	चीन	5	जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
2.	नेपाल	5	उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
3.	बांग्लादेश	5	पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
4.	म्यांमार	4	अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम
5.	पाकिस्तान	4	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू कश्मीर
6.	भूटान	4	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
7.	अफगानिस्तान	1	जम्मू कश्मीर

- भारत-पाकिस्तान की सीमा रेखा = रेडक्लिफ रेखा है जो 15 अगस्त 1947 को निर्धारित की थी
- भारत-चीन की सीमा रेखा = मैकमोहन जिंसे 1914 ई. में शिमला में निर्धारित की गई ।
- भारत-अफगानिस्तान की सीमा रेखा = डूरन्ड रेखा

2. जलीय सीमा

- मुख्य भूमि की तटीय सीमा की लंबाई 6100 किमी. है ।
- भारत की जलीय सीमा = 7516.6 किमी.

Mainland = 5422.6 km & Island = 2094 km

- सर्वाधिक लम्बी तटीय सीमा वाले राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश

राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	तटरेखा (किमी.)
अण्डमान निकोबार द्वीप समूह	1962
गुजरात	1215
आन्ध्र प्रदेश	970
तमिलनाडु	907
महाराष्ट्र	652
लक्षद्वीप	132
पुडुचेरी	47
दमन एवं दीव	42

तटवर्ती/सीमावर्ती सागर

1. सीमावर्ती सागर (Territorial Sea)
2. संलग्न सागर (Contiguous Sea)
3. अलग्ग्य आर्थिक क्षेत्र (Exclusive Economic Zone)

1. सीमावर्ती सागर

- यह क्षेत्र आघार रेखा से 12 समुद्री मील की दूरी तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत का एकाधिकार है ।

2. संलग्न सागर

- यह क्षेत्र आघार रेखा से 24 समुद्री मील तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत के पास वित्तीय अधिकार है ।
- यहाँ भारत सीमा शुल्क (Custom Duty) वशूल सकता है ।

3. अलग्ग्य आर्थिक क्षेत्र

- यह क्षेत्र आघार रेखा से 200nm तक स्थित है।
 - इस क्षेत्र में भारत के पास आर्थिक अधिकार है तथा यहाँ भारत संसाधनों का दोहन, द्वीप निर्माण तथा अनुसंधान आदि कर सकता है ।
- उच्च सागर :- यहाँ सभी देशों का समान अधिकार होता है ।

तटवर्ती सीमा के लाभ

- तटवर्ती सीमा दक्षिण भारत में समकारी जलवायु (Moderate Climate) का निर्माण करती है ।
- तटवर्ती सीमा बन्दरगाहों के निर्माण के लिए उपयोगी है । इन बन्दरगाहों के माध्यम से आयात-निर्यात व्यापार किया जाता है ।

- तटवर्ती सीमा भारत को विभिन्न देशों से जोड़ती है ।
- पर्यटन की दृष्टि से भी यह उपयोगी होती है ।
- महासागरीय संसाधनों तक तटवर्ती सीमा पहुँच बनाती है ।
- सुरक्षा की दृष्टि से भी तटवर्ती सीमा महत्वपूर्ण है ।

तटवर्ती सीमा के नुकसान

- सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है ।
- समुद्री लुटेरों, तस्करी आदि का भी उद्भव रहता है ।
- तटवर्ती सीमा के रखरखाव एवं सुरक्षा के लिए अतिरिक्त व्यय करना पड़ता है ।

निष्कर्ष :- तटवर्ती सीमा के नकारात्मक प्रभाव होने के बावजूद यह भारत के लिए लाभकारी है ।

भारतीय उपमहाद्वीप (Indian Subcontinent)

- उपमहाद्वीपीय उच्च भाग को कहा जाता है जो महाद्वीप में अपनी एक पृथक पहचान रखता है ।
- भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरण की दृष्टि से भारत एशिया के अन्य देशों से पृथक पहचान रखता है ।
- भारत के उत्तरी भाग में पर्वत स्थित हैं जैसे - हिन्दुकुश, सुलेमान, हिमालय, पूर्वांचल तथा पूर्व में अराकानयोंगा जो भारत को एशिया के मुख्य भूभाग से पृथक करते हैं ।
- भारत के दक्षिणी भाग में महासागरीय क्षेत्र स्थित हैं जो भारत तथा पड़ोसी देशों को पृथक पहचान दिलाता है ।
- भारतीय उपमहाद्वीप में निम्नलिखित देश सम्मिलित हैं:-

- | | |
|---------------|--------------|
| ➤ भारत | ➤ भूटान |
| ➤ पाकिस्तान | ➤ बांग्लादेश |
| ➤ अफगानिस्तान | ➤ श्रीलंका |
| ➤ नेपाल | ➤ मालदीव |

शिक्षण विधियाँ

सामाजिक विज्ञान के अर्थ एवं परिभाषा

परिभाषाएँ

1. **रेवलिस** — विज्ञान अन्तः चेतना के अभाव में आत्मा का हनन करता है।
2. **वेस्ले** — सामाजिक विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन दोनों मानवीय संबंधों की विवेचना करते हैं।
 - सामाजिक विज्ञान — प्रोढावस्था तक
 - सामाजिक अध्ययन — बाल्यावस्था तक
3. **एम.पी. मुफात** — सामाजिक अध्ययन ज्ञान का वह क्षेत्र है जो युवकों को आधुनिक सभ्यता को समझने में सहायता करता है।
4. **जे.एफ. फोरेस्टर** — सामाजिक अध्ययन का ध्येय मानदण्डों, वृत्तियों, आदर्शों, रुचियों का निर्माण करना है।
5. **बाइनिंग & बाइनिंग** — सामाजिक अध्ययन विषय वस्तु का ऐसा आधार है जिसके द्वारा हम अपने छात्रों की समझ से विश्व को सरल व स्पष्ट बना सकें।

सामाजिक अध्ययन का अर्थ एवं प्रकृति

- मानव को आधार मानकर किया गया समाज का अध्ययन सामाजिक अध्ययन कहलाता है अथवा मानवीय परिपेक्ष्य में किया गया समाज का अध्ययन सामाजिक अध्ययन कहलाता है।
- किसी भी देश की उन्नति या अवनति वहाँ की सामाजिक व्यवस्था पर निर्भर करती है। यह ध्यान में रखते हुए अमेरीका ने सन् 1892 में सामाजिक अध्ययन नियम की शुरुआत की।

सामाजिक अध्ययन की प्रकृति

- विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने वाले प्रत्येक विषय की विषय वस्तु एवं संरचना होती है जिसके आधार पर उस विषय की प्रकृति निश्चित की जाती है।
- सामाजिक अध्ययन प्रकृति (विशेषता) एकीकृत या सलयनकारी है।
- **सुकरात के अनुसार** — सुकरात ने सबसे पहले बताया कि मनुष्य प्रकृति का अध्ययन कर रहा है तो उसने कहा कि मनुष्य को मनुष्य का अध्ययन करना चाहिए जिससे मनुष्य का विकास हो सके।
- **प्लेटो के अनुसार** — प्लेटों ने कहा कि मनुष्य, प्रकृति और ईश्वर तीनों एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित है।
- **अरस्तू के अनुसार** — अरस्तू ने सबसे पहले कहा कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।

नोट — सामाजिक अध्ययन

1892 — अमेरिका में शुरुआत

1911 — समाज शास्त्र विषय जोड़ा गया

1916 — संवैधानिक मान्यता

1921 — राष्ट्रीय परिषद् की स्थापना

1934 — सामाजिक अध्ययन आयोग

1952-1953 — माध्यमिक शिक्षा आयोग

1955 — स्वतंत्र विषय के रूप में मान्यता

- सभी स्तरों पर सामाजिक अध्ययन सबसे पहले 1949 ई. में पंजाब में शुरुआत हुई।

सामाजिक अध्ययन की पाठ-योजना

योजना – किसी भी कार्य को करने से पहले उसकी रूपरेखा बनाना योजना कहलाता है।

- पाठ योजना का विचार गेस्टाल्टवादियों (वर्दीमर, कोहलर, कुर्ट कोपका, कुर्ट लेविन) ने दिया।
- गेस्टाल्टवादियों ने कहा था कि अध्यापक तब तक शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि वह सभी को सम्मिलित करते हुए योजना ना बना लें।
- उसी योजना को पाठ योजना/दैनिक पाठ योजना नाम से भी जाना जाता हैं।
- गेस्टाल्टवादियों के विचार को ध्यान में रखते हुए हरबर्ट स्पेंसर ने पंचपदीय सिद्धांत को आधार मानकर पाठ योजना की रूपरेखा तैयार की। अतः हरबर्ट स्पेंसर को पाठ योजना का जनक कहा जाता है।

पंच पदीय सिद्धांत – हरबर्ट

मूल पद	प्रारम्भ	संशोधित पद
प्रस्तावना	स्पष्टता	प्रस्तावना
प्रस्तुतिकरण	सम्बन्धता	प्रस्तुतिकरण
व्यवस्था	व्यवस्था	तुलना
तुलना	विधि	सामान्यीकरण प्रयोग

विधि / सामान्यीकरण / मूल्यांकन

- डॉ. B.S. ब्लूम ने पाठ योजना में शिक्षण उद्देश्यों को जोड़ा।
- H.C मॉरीशन ने हरबर्ट स्पेंसर के पंचपदीय सिद्धान्त के मूल पद और आंशिक संशोधित पद दोनों में संशोधन किया।
- इन्होंने व्यवस्था के स्थान पर शिक्षण विधि/सहायक सामग्री को तुलना के स्थान पर बोध प्रश्न /पुनरावृत्ति प्रश्नों को एवं अन्तिम पद प्रयोग के स्थान पर गृहकार्य को रखा।

गृहकार्य – कक्षा कक्ष में सीखे हुए ज्ञान को अभ्यास के द्वारा स्थायित्व देना गृहकार्य कहलाता है।

आदर्श पाठ योजना

विद्यालय का नाम	विषय	कालांश
दिनांक	प्रकरण	अवधि
कक्षा एक कालांश की अवधि 35 – 40 मिनट होती है।		
नोट – इनको श्यामपट्ट कॉपी कहा जाता है।		

शिक्षण उद्देश्य

- (i) ज्ञान
- (ii) अवबोध
- (iii) ज्ञानोपयोग
- (iv) कौशल
- (v) अभिरूचि
- (vi) अभिवृत्ति

- (i) पूर्व ज्ञान – प्रकरण से संबंधित सामान्य जानकारी
- (ii) विधि शिक्षण
- (iii) सहायक सामग्री
- (iv) प्रस्तावना

- प्रस्तावना के द्वारा यह जाना जाता है कि बालक प्रकरण के बारे में कहाँ तक या कितना जानता है।
- प्रस्तावना छात्र के पूर्व ज्ञान पर आधारित होती है।
- प्रस्तावना छात्र के स्तर अनुसार एवं क्रमबद्ध होती है।
- प्रस्तावना दो प्रकार से निकाली जाती है –
 - (a) प्रश्नोत्तरी प्रविधि
 - (b) उदाहरण/कहानी द्वारा
- प्रस्तावना का समय 5–7 मिनट निर्धारित किया गया है।
- जब प्रस्तावना प्रश्नोत्तरी प्रविधि के द्वारा निकाली जाती है तो प्रश्नों की संख्या 5–7 होती है।
- जब प्रस्तावना उदाहरण/कहानी के द्वारा निकाली जाती है तो प्रश्नों की संख्या 1–3 होती है।
- प्रस्तावना को पाठोस्थापना / विन्यास के नाम से जाना जाता है।

उद्देश्य कथन

पूर्व ज्ञान अर्थात् प्रस्तावना को नवीन ज्ञान अर्थात् प्रस्तुतिकरण से जोड़ना उद्देश्य कथन कहलाता है। उद्देश्य कथन को पाठयाभिसूचना भी कहा जाता है।

नोट – पाठ योजना में उद्देश्य कथन रीले ने जोड़ा।

प्रस्तुतिकरण

क्रम सं.	शिक्षण बिन्दु	छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ	शिक्षण विधि / प्रविधि	सहायक सामग्री	श्यामपट्ट सार

- (1) प्रस्तुतिकरण के अन्तर्गत शिक्षण बिन्दुओं की संख्या – 1–3
- (2) शिक्षण बिन्दु में विकासात्मक प्रश्नों की संख्या – 1–3
- (3) प्रत्येक शिक्षण बिन्दु में मूल/पुनरावृत्ति प्रश्नों की संख्या – 1–3

नोट – सामाजिक अध्ययन विषय में श्यामपट्ट सार लिखा जाता है।

मूल्यांकन प्रश्न

पाठ योजना के अंतर्गत मूल्यांकन प्रश्नों की संख्या = 5-6 होती है। इनमें से एक प्रश्न निबंधात्मक होना जरूरी है।

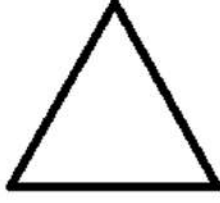
नोट

- व्यवहारिक उद्देश्यों को प्रदर्शन उद्देश्य के रूप में सभी जाना जाता है।
- शैक्षणिक उद्देश्यों के कार्यान्वयन के लिए पाठ्यक्रम एक पूर्ण योजना है।

शिक्षण (Teaching)

- अध्यापक और विद्यार्थी के मध्य होने वाली अन्तः क्रिया शिक्षण क्रिया कहलाती है।
- शिक्षण को जॉन ड्यूबी ने त्रिध्रुवीय प्रक्रिया माना है।

1. अध्यापक (स्वतंत्र चर)



2. पाठ्यक्रम (मध्यस्थ चर)

3. विद्यार्थी (आश्रित चर)

- एडम्स ने शिक्षण को द्विध्रुवीय प्रक्रिया माना है।
 1. अध्यापक (स्वतंत्र चर)
 2. विद्यार्थी (आश्रित चर)एडम्स के अनुसार शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे पर अर्थात् एक दूसरे के विकास में परिवर्तन के लिए कार्य करता है।

परिभाषाएँ

B.O स्मीथ के अनुसार शिक्षण क्रियाओं की एक ऐसी विधि है जो सीखने की उत्सुकता जागृत करती है। वर्ट के अनुसार शिक्षण अधिगत हेतु प्रेरणा पथ प्रदर्शन व प्रोत्साहन है। थाइन के अनुसार अधिगम में वृद्धि करना ही शिक्षण है।

शिक्षण की विशेषताएँ

1. शिक्षण एक अन्तः क्रिया है।
2. शिक्षण एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।
3. शिक्षण एक सौदशम प्रक्रिया है।
4. शिक्षण एक विकासात्मक प्रक्रिया है।
5. शिक्षण आमने-सामने होने वाली प्रक्रिया है।
6. शिक्षण एक उपचार विधि है।
7. शिक्षण का मापन किया जा सकता है।
8. शिक्षण एक तार्किक क्रिया है।
9. शिक्षण पथ प्रदर्शन है।
10. शिक्षण निर्देशन की प्रक्रिया है।
11. शिक्षण एक औपचारिक व अनौपचारिक प्रक्रिया है।
12. शिक्षण का कार्य ज्ञान में विकास करना है।
13. शिक्षण वातावरण में समायोजित होने की योग्यता विकसित करता है।
14. शिक्षण एक कौशलपूर्ण प्रक्रिया है।
15. शिक्षण छात्र तथा अध्यापक के मध्य स्वस्थ एवं मधुर सम्बन्ध स्थापित करता है।

